श्री बहुरूपगर्भ स्तोत्र का ध्यान सहित हिन्दी अनुवाद

दो शब्द

कई वर्षों से गुरूदेव के कई भक्त शिष्य जन मुझे बहुरूपगर्भ का हिन्दी उल्था करने के लिये अनुनय विनय करते थे। मैं सुन कर बात टाल देती थी। गुरूदेव की आन्तरिक प्रेरणा से प्रेरित होकर इस वर्ष यह कार्य सफल हुआ। एक सप्ताह में ही न जाने कैसे इस दुरूह स्तोत्र का हिन्दी अनुवाद होकर आप भक्तों के सम्मुख प्रस्तुत हुआ है। बीजाक्षरों का अर्थ करना वर्जित है। इन के अतिरिक्त कई प्राचीन काल के पारिभाषिक शब्दों को भी अपने रुप में ही रखा गया है। भक्त-जन इस टीका से यदि लाभ प्राप्त करेंगे तो मेरा यह प्रयास सफल होगा। गुरू-प्रसाद समझ कर इस का पाठ श्रद्धा-पूर्वक करिये। कल्याण अवश्य होगा। मैं गुरूदेव के जन्म-महोत्सव के शुभ दिन पर ही इस का मोचन कर रही हूँ। मेरा यह छोटा सा प्रयास गुरूदेव को ही अर्पित है।

गुरूकृपावगाहिनी
प्रभा देवी
११ अप्रैल २०१० ईसवी
२०६७ विक्रमी
संवत्

श्री स्वछन्दनाथ के ध्यान का हिन्दी अनुवाद

त्रिपंचनयनं देवं जटामुकुट मंडितं चन्द्रकोटि प्रतीकाशं चंद्राऽर्धकृत शेखरम्।।
पंचवक्त्रं विशालाक्षं सर्प-गोनास मंडितम्।
वृश्चिकैरग्निवर्णाभैर्हारेण तु विराजितम्।।

स्वच्छन्द देव के पांच मुखों में तीन तीन नेत्र होने से कुल पंद्रह नेत्र हैं। इन का शिरस्थान जटा रूप मुकुट से शोभित है। करोडों चन्द्रमा की कांति के समान शरीर प्रज्वलित है। माथा अर्ध-चंद्र से सुशोभित है। पांच मुखों में विशाल नेत्र हैं। गला सांप और गोनास (गुनसों) से शोभित है। इतना ही नहीं लाल वर्ण के बिच्छुओं की माला से भी गला शोभित है।

कपालमालाभरणं खड्गखेटकधारिणम्।
पाशांकुशधरं देवं शरहस्तं पिनाकिनम्।।

गला, मनुष्यों की खोपडियों की माला से भी आवृत्त है। तलवार और सिप्पर दो हाथों में धारण किये हैं। यमपाश और अंकुश (जिस से हाथी काबू में रहता है) अन्य दो हाथों में है। इस के अतिरिक्त तीर और "पिनाक" नाम का धनुष भी धारण किया है।

वरदाभयहस्तं च मुण्डखट्वांगधारिणम्।
वीणा डमरुहस्तं च घण्टाहस्तं त्रिशूलिनम्।।

(अब अन्य हाथों का वर्णन कर रहे हैं।) वर तथा अभय की मुद्रा से दो हाथ सुशोभित हैं। खोपडी तथा खट्वांग (चारपाय का एक पाया) भी रखे हैं। इन के अतिरिक्त अन्य चार हाथों में वीणा, डमरु, घण्टा और त्रिशूल धारण किये हैं।

वज्रदण्डकृताटोपं परश्वायुधहस्तकम्।
मुद्गरेण विचित्रेण वर्तुलेन विराजितम्।।

वज्र (त्रठ) भयंकर यम-दंड, कुल्हाडी, गोलाकार विचित्र रंगो से मंडित मुद्गर अन्य चार हाथों में सुशोभित हो रहे हैं।

सिंहचर्मपरीधानं गजचर्मोत्तरीयकम्।
अष्टादशभुजं देवं नीलकण्ठं सुतेजसम्।।

शेर की खाल का तो शरीर ढकने के लिए वस्त्र पहना है और हाथी की खाल का डुपटा ओढा है। इस रूप में वर्णित अठारह भुजाओं से युक्त ये नीलकंठ महादेव अति तेजस्वी हैं।

अर्ध्ववक्त्रं महेशानि स्फटिकाभं विचिन्तयेत्।
आपीतं पूर्ववक्त्रं तु नीलोत्पल दलप्रभम्।।

उत्तर का मुख स्फटिकरत्न के समान है। श्वेत वर्ण का अर्ध्व मुख है। पूर्व का मुख हल्की नीलिमा को धारण किये हुए नीले कमल के समान है।

दक्षिणं तु विजानीयाद्वामं चैव विचिन्तयेत्।।
दाडिमीकुसुमप्रख्यं कुंकुमोदक सन्निभम्।।
चन्द्रार्बुद प्रतीकाशं पश्चिमम् तु विचिन्तयेत्।
स्वच्छन्द भैरवं देवं सर्वकामफलप्रदम्।

दक्षिण दिशा की ओर जिसे वाम ही कहेंगे यह मुख लाल अनार के फूल के समान रक्त-वर्ण का है। अर्बुद संख्यक चन्द्रमाओं की कांति के समान पश्चिम मुख का ध्यान करना चाहिये ये कुंकुम केसर के रंग के समान है। इस ऊपरवर्णित रूप से शोभित स्वच्छन्द भैरव का ध्यान करना चाहिये जो सभी कामनाओं को सफल करने में सक्षम हैं। सभी मनोवांछित फल को देने वाले हैं।

ध्यायते यस्तु युक्तात्मा क्षिप्रं सिध्यति मानवः। या सा पूर्वं मया ख्याता अघोरी शक्तिरुत्तमा भैरवं पूजयित्वा तु तस्योत्संगेतु तां न्यसेत्।।११।। याद्रश्यं भैरवं रूपं भैरव्यास्ताद्दगेव हि। ईषत्करालवदनां गम्भीर विपुलस्वनाम्। प्रसन्नास्यां सदा ध्यायेद्भैरवीं विस्मितेक्षणाम्।।१२।।

जो समाहित बना हुआ मनुष्य इस प्रकार वर्णित स्वछन्दनाथ का ध्यान करेगा वह अवश्य अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त करेगा। जिस सर्वश्रेष्ठ अघोरी शक्ति का मैंने पूर्व वर्णन किया है, भैरवनाथ की पूजा यानी ध्यान के बाद भैरवी शक्ति को भैरव की गोदी में रख कर पुनः ध्यान करना चाहिये। भैरव की आकृति का जैसे बखान किया है वैसे ही भैरवी का भी ध्यान है। अन्तर इतना ही है कि भैरवी का मुख तनिक भयंकर है क्योंकि काली देवी के रूप में भी यदा कदा परिवर्तित हो जाती है। वाणी भी गम्भीर स्वर से युक्त तथा नेत्र विस्मय युक्त होते हैं ऐसा ध्यान करना चाहिये तथा भैरवी को सदा भैरव की गोदी में बैठी हुई ही देखना चाहिये।

अथ बहुरूपगर्भस्तोत्रम्

ॐ नमः स्वच्छन्दभैरवाय

ब्रह्मादिकारणातीतं स्वशक्तयानन्दनिर्भरम्।
नमामि परमेशानं स्वच्छन्दं वीरनायकम्।।१।।

ओम् स्वच्छन्दभैरव नाथ को नमस्कार हो।
ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश जो जगत् की सृष्टि, रक्षा तथा विनाश करते हैं, उन तीन कार्य कर्त्ताओं को जो सत्ता देने वाले हैं। जो अपनी स्वात्मशक्ति के आनन्द में टिके हैं, जो परमेश्वर हैं तथा जो "वीर" इन्द्रियों के नायक-आत्मा हैं, उन्हीं स्वच्छन्द नाथ को मैं प्रणाम करता हूं।

कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।
पप्रच्छ प्रणता देवी भैरवं विगतामयम्।।२।।

जो जगद्गुरु, देवताओं के आराध्यदेव आत्मरूप होकर शिर-स्थान में विराजमान् हैं, ऐसे भैरव से देवी भैरवी स्वस्थमन से नमन् करते हुए पूछने लगीं।

श्रीदेव्युवाच

प्रायश्चितेषु सर्वेषु समयोल्लंघनेषु च।
महाभयेषु घोरेषु तीव्रोपद्रवभूमिषु।।३।।
च्छिद्रस्थानेषु सर्वेषु सदुपायं वद प्रभो।
येनायासेन रहितो निर्दोषश्च भवेन्नरः।।४।।

देवी कह रही हैं।

हे भगवन्! जो जन सभी सिद्धान्तों का उल्लंघन करें यानी न मानें। पाप से उत्पन्न भयंकर भय से भयभीत हो जायें, कठिन उपद्रव की अवस्था में हों, सभी दोषों से दूषित हो गये हों उन्हें उन पापों से निवृत्त होने के लिए कोई सहज उपाय बताइये जिससे वे उन पापों से मुक्त हो जायें।

श्री भैरव उवाच

श्रृणु देवि परं गुह्यं रहस्यं परमाद्भुतम्।
सर्वपाप प्रशमनं सर्वदुःख निवारणम्।।५।।
प्रायश्चितेषु सर्वेषु तीव्रेष्वपि विमोचनम्।
सर्वच्छिद्रापहरणं सर्वार्तिविनिवारकम्।।६।।

भैरव कह रहे हैं।

हे देवी! सुनो मैं तुम्हें अद्भुत रहस्यपूर्ण उपाय बताऊंगा जो सभी पापों से छुटकारा दिला सकेगा। सभी दुःखों से मुक्त करायेगा। उत्कट पापों से तथा सभी क्लेषों को दूर करने में सक्षम होगा।

समयोल्लंघने घोरे जपादेव विमोचनम्।
भोगमोक्षप्रदं देवि सर्वसिद्धिफलप्रदम्।।७।।
शतजाप्येन शुद्धयन्ति महापातकिनोऽपिये।
तदर्धं पातकं हन्ति तत्पादेनोपपातकम्।।८।।

सभी सिद्धांतो की अवहेलना कटिबद्ध रूप से करने वाले को जो पाप का दंड मिलता है उस से निवृत होने के लिए इस बहुरूप-मंत्र का जप करना चाहिए। महापापी यदि सौ बार इस का जप करेगा तो वह पाप-मुक्त हो जायेगा। अन्य छोटे पापों से छुटकारा पाने के लिये या अनवधानता में गल्ती से किये गये पापों से मुक्त होने के लिये पच्चास बार या पच्चीस बार जप करने से पाप-निवृत्ति हो जाती है।

कायिकं वाचिकं चैव मानसं स्पर्शदोषजम्।
प्रमादादिच्छया वापि सकृज्जापेन शुद्ध्यति।।९।।
यागारम्भे च यागान्ते पठितव्यं प्रयत्नतः।
नित्ये नैमित्तिके काम्ये परस्याप्यात्मनोऽपिवा।।१०।।

शरीर से, वाणि से या फिर मन से किसी को पीडा दी हो अथवा अनधिकार चेष्टा से किसी से स्पर्श किया हो अनवधानता से अथवा जान बूझ कर ये पाप कियें हो तो इस पाप की निवृत्ति, अघोर मंत्र के एक बार ही माला जप से हो जाती है।

इस का पाठ यज्ञ के प्रारम्भ में तथा समाप्ति पर अति श्रद्धा व प्रयत्न-पूर्वक करना चाहिये। नित्य-कर्म तथा श्राद्ध आदि कर्मों में भी इस का पाठ करना चाहिये। अपने हित के हेतु या फिर अन्य की भलाई के लिये भी इसे पढ़ना चाहिये।

निच्छिद्रकरणं प्रोक्तं स्वभावपरिपूरकम्।
द्रव्यहीने मन्त्रहीने यज्ञयोगविवर्जिते।।११।।
भक्तिश्रद्धाविरहिते शुद्धिशून्ये विशेषतः।
मनोविक्षेपदोषे च विलोपे पशुवीक्षिते।।१२।।
विधिहीने प्रमादे च जप्तव्यं सर्वकर्मसु।
नातः परतरो मन्त्रो नातः परतरा स्तुतिः।।१३।।

इस बहुरूप गर्भ का जप या पाठ प्रत्येक शुभ-कार्य को निर्विघ्न रूप से संपन्न करने में सहायक होता है। शुभाचरण की पूर्ति करता है। इतना ही नही, धन से रहित, मन्त्रों से अभिज्ञ, यज्ञ और योग-क्रिया को न जानने वाला, प्रभु-भक्ति तथा श्रद्धा न रखने वाला, पूर्ण रूप से अपवित्र, पापों से आवृत्त होने के कारण मानसिक कष्ट से आच्छादित तथा दुष्ट के बहकावे में आकर दूषित व्यक्ति भी यदि इस का पाठ करे तो उस के अन्तः-करण शुद्ध हो जाते हैं। कारण यह कि इस मन्त्र से बढ़ कर तथा इस स्तुति से अधिक प्रभावशाली अन्य कोई मन्त्र या स्तुति नही है।

नातः परतरा काचित् सम्यक्प्रत्यंगिरा प्रिये।
इयं समयविद्यानां राजराजेश्वरीश्वारि।।१४।।

हे प्रिय अंगिरा देवी, मैं तुम्हें सत्य कह रहा हूं-इस स्तोत्र से बढ़ कर कोई प्रभावशाली स्तोत्र नही है।

परमाप्यायनं देवि भैरवस्य प्रकीर्तितम्।
प्रीणनं सर्वदेवानां सर्वसौभाग्यवर्धनम्।।१५।।
स्तवराजमिमं पुण्यं श्रणुष्वावहिता प्रिये।।१६।।

हे देवि! परभैरव की कीर्तना से भरा हुआ यह स्तोत्र पूर्ण रुप से आप्यायन करने वाला तथा संतुष्टिप्रद है। सभी सौभाग्य को प्रदान करने वाला है। अब हे प्रिये! तुम मन लगा कर इस पुण्यं स्तोत्र का श्रवण करो।



वामे खेटकपाशशार्ङ्ग विलसदण्डं च वीणाण्टिके
बिभ्राणं ध्वजमुद्गरोस्वनिभदे व्यक्ङं कुठारंकरे।
दक्षेस्यक्ङुशकन्दलेषुडमरुन्वज्र त्रिशूलाभयान्न
रूद्रस्थं शरक्त्रमिन्दुधवलं स्वच्छन्दनाथं स्तुमः।।

(स्वच्छन्दनाथ के) बाहें हाथ में ढाल, यमपाश, सींग का बना हुआ आयुध तथा शोभित बना हुआ दण्ड तथा शब्द करने वाली वीणा, ध्वजा, मुद्गर और फरसा है। दाहें हाथ में अंकुश, कपाल (खोपडी), डमरू, वज्र (धम्वोलि), त्रिशूल, अभय मुद्रा और तीर है। इस भांति चन्द्रमा के समान श्वेत तथा कांतिमान मुख वाले स्वच्छंद नाथ की हम स्तुति कर रहे हैं।

ॐ बहुरुपाय विद्महे, कोटराक्षाय धीमहि।
तन्नोऽघोरः प्रचोदयात्।।३।।

(अघोरेऽभ्योऽय घोरेभ्यो घोरतरीभ्यश्च। सर्वथा
शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररुपेभ्यः।)

(श्रीभैरवः)

ॐ नमः परमाकाशशायिने परमात्मने।
शिवाय परसंशान्तनिरानन्दपदाय ते।।१।।

चिदाकाश में अवस्थित परमात्मा को नमस्कार है। कल्याण करने वाले शान्त तथा निरानन्द अवस्था में स्थित आप परमात्मा को नमस्कार है।

अवाच्यायऽप्रमेयाय प्रमात्रे विश्वहेतवे।
महासामान्य रूपाय सत्तामात्रैकरूपिणे।।२।।

आप की महिमा बखानी नही जा सकती, आप असीम हैं। आप ही केवल जगत् के कारण हैं। इस रूप से तो आप महासामान्य सत्ता बन कर विश्वात्मा हैं।

घोषादिंदशधाशब्दबीज भूताय शम्भवे।
नमः शान्तोग्रघोरादिमन्त्रसन्दर्भ गर्भिणे।।३।।

समाधि में आप ही साधक को घोष, अघोष आदि दस नादों के बीज यानी कारण बन कर अनुभवित होते हैं। आप ही शान्ति-प्रद मन्त्र, दूसरों को कष्ट पहुंचाने वाले मंत्र तथा घोर-मन्त्रों को सफल बनाने वाले शिव हैं। आप को नमस्कार हो।

रेवतीसंगविसृम्भसमाश्लेष विलासिने।
नमः समरसास्वादपरानन्दोपभोगिनं।।४।।

परा शक्ति के साथ अभिन्न होकर हर्ष-पूर्वक सृष्टि रूप विलास करने वाले तथा साम्य-रस का आस्वाद लेते हुए परमानन्द में रमण करने वाले आप शंकर को नमस्कार हो।

भोगपाणेनमस्तुभ्यं योगीशैः पूजितात्मने।
द्वयनिर्दलनोद्योगसमुल्लासितमूर्तये।।५।।

सांपो को हाथ का आभूषण बनाने वाले, योगीन्द्रों के द्वारा पूजित बने हुए आप को नमस्कार हो। द्वैत की गांठों को खोलने में लगे हुए तथा उस में सफलता के कारण उल्लास से युक्त बने हुए मूर्तिमान शिव को नमस्कार हो।

सरत्प्रसरविक्षोभविसृष्टाऽखिल जन्तवे।
नमो माया स्वरूपाय स्थाणवे परमेष्ठिने।।६।।

अपने आनन्दधाम से तनिक खिसकने से अनमने होकर संपूर्ण जीवों के सृष्टि-कर्ता होकर, मायावी बन कर स्थाणु यानी जड तुल्य से बने हुए परमेश्वर आप को नमस्कार हो।

घोर संसार संभोग दायिने स्थितिकारिणे।
कलादिक्षितिपर्यन्तपालिने विभवे नमः।।७।।

भयावह सांसारिक भोगों को देकर फिर उन में टिकाव कराने वाले तथा कला, विद्या आदि तत्त्वों से लेकर पृथ्वी तक छैतीस तत्त्वों में ठहरे हुए प्राणियों के वैभव को दर्शाने वाले आप प्रभु को नमस्कार हो।

रेहनाय महामोहध्वान्त विध्वंसहेतवे।
हृदयाम्भोजसंकोच भेदिने शिवभानवे।।८।।

व्याप्त महामोह रुपी अंधकार को समूल समाप्त करने वाले तथा हृदय रुपी कमल की संकुचितता को दूर करके विकसित बनाने वाले शिव रूप सूर्य आय को नमस्कार हो।

भोगमोक्षफलप्राप्तिहेतु योगविधायिने।
नमः परमनिर्वाणदायिने चन्द्रमौलये।।९।।

यौगिक-प्रक्रिया के विधान कर्त्ता होकर पारमार्थिक भोग तथा मोक्ष को देने वाले, आत्यन्तिक आनन्द को प्रदान करने वाले चन्द्रशेखर शिव को नमस्कार हो।

घोष्याय सर्वमन्त्राणां सर्व वाग्ङ्मयमूर्तये।
नमः शर्वाय सर्वाय सर्वपाशापहारिणे।।१०।।

सभी मन्त्रों को सफल बनाने वाले तथा सभी वाणियों के रुप में स्वयं मूर्तिमान बने हुए सर्वव्यापक, विघ्रहर्ता शंकर को नमस्कार है।

रवणाय रवन्ताय नमस्ते रावराविणे।
नित्याय सुप्रबुद्धाय सर्वान्तरतमायते।।११।।

(पापियों को) क्रन्दन-चीखें दिलाने वाले, प्रायश्चित करने के बाद दुःख से छुडाने वाले और फिर दुःखों से मुक्त कराने वाले, सर्वव्यापक, नित्य सजग शिव को नमस्कार है।

घोषाय परनादान्तश्चराय खचराय ते।
नमो वाक्पतये तुभ्यं भवाय भवभेदिने।।१२।।

(तीव्र अभ्यास के फल स्वरूप) घोष, अधोष, नाद, नादान्त दस नादों में अनुभवित होने वाले, चिदाकाश में विचरण करने वाले, बृहस्पतिपाद के रूप में ठहरे हुए संसार का भेदन कराने वाले शंकर को नमस्कार हो।

रमणाय रतीशाग्ङ्दाहिने चित्रकर्मिणे।
नमः शैलसुताभर्त्रे विश्वकर्त्रे महात्मने।।१३।।

मनोरम, कामदेव को भस्म करने वाले, विचित्र रचना रचने वाले, शैलजा पार्वती के पतिदेव, जगत् को उत्पादन करने वाले, महानुभाव शिव को नमस्कार है।

नमः पारप्रतिष्ठाय सर्वान्तपद्गाय ते।
नमः समस्त तत्त्वाध्वव्यापिने चित्स्वरुपिणे।।१४।।

(पारप्रतिष्ठाय) शान्तातीता कला में स्थित, इसी लिए सभी सीमाओं को पार कर प्राप्त किये जाने वाले अपरमपार भगवान् को नमस्कार है। सभी षड़ध्वाओं, कला तत्व, भुवन, वर्ण, मंत्र पद, अध्वाओं में व्यापक चित् स्वरूप भगवान् को नमस्कार हो।

रेवद्धराय रुद्राय नमस्ते रूपरूपिणे।
परापरपरिस्पन्दमन्दिराय नमो नमः।।१५।।

उत्तम "रेवद" नामक रुद्र जो अनेकों आकृतियों में व्यापक हैं और जो परा, परापरा, अपरा में स्पन्दित ज्ञान रुप बने हुए हैं ऐसे शंकर को बार बार नमस्कार है।

भरिताखिलविश्वाय योगगम्याय योगिने।
नमः सर्वेश्वरेश्वाय महाहंसाय शंभवे।।१६।।

सम्पूर्ण विश्व में व्यापक होकर भी, योगियों को योग द्वारा ही प्राप्त किये जाने वाले, पांच "कारणों" के भी स्वामी राजहंस शंकर को नमस्कार हो।

चर्च्याय चर्चनीयाय चर्चकाय चराय ते।
रविन्दुसन्धि संस्थाय महाचक्रेश ते नमः।।१७।।

भगवान् की स्तुति रूप चर्चा, चर्चा का विषय स्वयं भगवान् तथा चर्चा करने वाला साधक तीनों में आप ही चेतन रूप होकर ठहरे हैं। रवि-सूर्य प्राण, इन्दु-चन्द्रमा अपान के मध्य सन्धि में अवस्थित हुए महाचक्र के ईश्वर आप को नमस्कार है।

सर्वानुस्यूत रूपाय सर्वाच्छादकशक्तये।
सर्वभक्षाय सर्वाय नमस्ते सर्ववेदिने।।१८।।

सभी जड़-चेतन में रमे होकर भी स्वयं न दिखाई देने की शक्ति से युक्त, सभी का संहार करके फिर भी सर्वव्यापक, सर्वज्ञ आप प्रभु को नमस्कार हो।

रम्याय वल्लभाक्रान्तदेहार्धाय विनोदिने।
नमः प्रपन्नदुष्प्राप्य सौभाग्यफलदायिने।।१९।।

मनोरम पार्वती के पति होकर अर्धनारीश्वर बन कर लीला करने वाले तथा शरणागत भक्तों को मोक्ष रूपी असाधारण फल प्रदान करने वाले आप शंकर को नमस्कार है।

तन्महेशाय तत्त्वार्थवेदिने भववेदिने।
महाभैरवनाथाय भक्तिगम्याय ते नमः।।२०।।

ऐसे आप महेश्वर को नमस्कार हो जो पारमार्थिक रहस्य के ज्ञाता होकर संसार को भी परखने वाले हैं, सभी भैरवों के स्वामी हैं और जो केवल भक्ति से ही जाने जाते हैं-अनुभव किये जाते हैं।

शक्तिगर्भ प्रबोधाय शरण्यायाऽशरीरिणे।
शान्तिपुष्टयादिसाध्यार्थं साथकाय नमोऽस्तु ते।।२१।।

अहृश्य रह कर शरण में आये हुए साधकों को जगत में रह कर ही ज्ञान से उजागर करने वाले तथा उनको शांति, पुष्टि आदि साधनाओं में सफलता प्रदान करने वाले आप निराकार प्रभु को नमस्कार है।

रवत्कुंडलिनीगर्भ प्रबोधप्राप्त शक्तये।
उत्स्फोटना पटुप्रौढ़परमाक्षरमूर्तये।।२२।।

उद्बोधित-जाग्रत कुंडलिनी में छिपे हुए अनाहद नाद की ध्वनि से प्राप्त अनन्त शक्ति-संपन्न तथा भयंकर स्फोट से उत्पन्न गंभीर अक्षर-ओंकार के स्वरुप को धारण करने वाले आप की सदा जय हो।

समस्तव्यस्त संग्रस्त रश्मिजालोदरात्मने।
नमस्तुभ्यं महामीनरूपिणे विश्वगर्भिणे।।२३।।

आप विराट् रुप आत्मा में ही सभी माया में ग्रथित किरणों का जाल अवस्थित यानी फैला हुआ है। आप महामीन (मछली) के समान स्पन्दित होकर जगत् को अपने में ही ठहरा कर व्यापक हैं। आप को नमस्कार है।

रेवारणिसमुद्भूत वह्निज्वालावभासिने।
घनीभूतविकल्पात्म विश्वबन्धविभेदिने।।२४।।

"रेव" नामक लकडी से प्रकट बनी हुई अग्नि की लाट को दर्शाने वाले तथा द्रढ विकल्पात्मक संसार के बन्यन से मुक्त कराने वाले आप की जय हो।

भोगिनीस्यन्दनारूढिप्रौढमालब्धगर्विणे।
नमस्ते सर्वभक्ष्याय परमामृत लाभिने।।२५।।

ऐश्वर्य रुपी सिंहिनी रूपात्मक रथ पर चढ़ कर प्राप्त किये हुए गर्व से संपन्न तथा रुद्र रुप धारण करके सम्पूर्ण ब्रह्मांड का भक्षण यानी संहार करके परम अमृत प्रदान करने वाले आप की जय हो।

णफकोटिसमावेशभरिताखिलसृपृये।
नमः शक्ति शरीराय कोटिद्वितय सङ्गिने।।२६।।

णकार वर्ण से लेकर फकार तक स्वर और व्यञ्जनों के एकमेक होने वाली उच्चतम मालिनी के रूप में अनेक सृष्टि में भाषा का रूप धारण करके, जगत रुप शक्ति के संग सदा रह कर करोडों भाषात्मक शब्द ब्रह्म को नमस्कार हो।

महामोहमलाक्रान्त जीववर्ग प्रबोधिने।
महेश्वराय जगतां नमः कारणबन्धवे।।२७।।

द्वैत-दृष्टि के कारण भयंकर मोह में उलझे हुए जीवों को यदा-कदा शक्ति-पात से उजागर करने वाले, जगत् के महेश्वर तथा विश्व-रचना के तत्व स्वरुप आप की जय हो।

स्तेनोन्मूलनदक्षैकस्मृतये विश्वमूर्तये।
नमस्तेऽस्तु महादेवनाम्ने परस्वधात्मने।।२८।।

आप की स्मृणा करने से चोरों का समूलोच्छेदन हो जाता है। आप जगत् रूप से सदा प्रत्यक्ष हैं। पारमार्थिक धन को प्रदान करने वाले महादेव आप की जय हो।

रुग्द्राविणे महावीर्यरुरुवंश विनाशिने।
रुद्राय द्राविता शेषबन्धनाय नमोनमः।।२९।।

रोगों को हटाने वाले, महान् शक्ति-संपन्न, "रुरु" राक्षस वंश का नाश करने वाले, रुद्र रूप धारण करके सभी मायिक बन्धनों से छुटकारा दिलाने वाले आप सर्व-समर्थ भगवान् को बार बार नमस्कार हो।

द्रवत्पररसास्वादचर्वणोद्युक्त शक्तये।
नमस्त्रिदशपूज्याय सर्वकारणहेतवे।।३०।।

प्रसरित परमार्थ रुपी अमृत रस का आस्वाद लेने वाले शक्ति-संपन्न देवताओं के गुरु बृहस्पतिपाद के द्वारा पूजित तथा जगत् के संचालक, पांच कारणों को शक्ति प्रदान करने वाले आप को नमस्कार हो।

रुपातीत नमस्तुभ्यं नमस्ते बहुरुपिणे।
त्र्यम्बकाय त्रिधामान्तचारिणे च त्रिचक्षुशे।।३१।।

हे निराकार आप को नमस्कार हो। साकार होकर विश्वरुप आप को नमस्कार हो। तीन (जाग्रत, स्वप्न तथा सुषुप्ति) अवस्थाओं में व्यापक होकर विचरण करने वाले तथा तीन (सूर्य, चंद्रमा तथा अग्नि) रूप नेत्रों वाले त्रम्वकनाथ आप को नमस्कार हो।

पेशलोपायलभ्याय भक्तिभाजां महात्मने।
दुर्लभाय मलाक्रान्तचेतसां तु नमोनमः।।३२।।

भक्तिमानों को गुरु-युक्ति से सहज में प्राप्त होने वाले आप महान स्वरुप को नमस्कार हो। आणव, मायीय तथा कार्ममल से लिप्त मलीन अन्तःकरण वालों को न दर्शन देने वाले आप दुर्लभ शंकर को बार बार नमस्कार हो।

भवप्रदाय दुष्टानां भवाय भवभेदिने।
भव्यानां तन्मयानां तु सर्वदाय नमोनमः।।३३।।

हे शंकर! आप दुष्टों को संसार देने वाले अर्थात् जगत् में फंसाने वाले हैं और भाग्यशाली अपने भक्तों को जो आप में लौ लगाने वाले हैं उन्हें सब कुछ देने वाले हैं आप को बार बार नमस्कार है।

अणूनां भुक्तये घोर घोर संसारदायिने।
घोरातिघोर मूढानां तिरस्कर्त्रे नमो नमः।।३४।।

द्वैत-दृष्टि वाले मूढ़ जीवों को भयंकर संसार में फंसा कर उनका तिरस्कार यानी निग्रह करने वाले आप को बार बार नमस्कार हो।

इत्येवं स्तोत्रराजेशं महा भैरवभाषितम्।
योगिनीनां परं सारं न दद्यात् यस्यकस्यचित्।।

इस प्रकार का यह महा प्रभावशाती स्तोत्र भैरवनाथ ने कहा है। योगिनीयों का यह परम विषय है। वे भी इसके महत्व को जानती हैं। अतः असंस्कारी ऐसे वैसे व्यक्तियों के सामने इस स्तोत्रराज का पाठ या चर्चा नही करनी चाहिये।

अदीक्षिते शठे क्रूरे निःसत्ये शुचिवर्जिते।
नास्तिके च खले मूर्खे प्रमत्ते विप्लुते अलसे।।

जो व्यक्ति गुरु-संप्रदाय से दीक्षित न हो। मूर्ख हो, कठोर स्वभाव वाला हो, झूठ बोलने वाला हो, अपवित्र आचरण वाला, भगवान की सत्ता को न मानने वाला नास्तिक, दुष्ट अन्तः करण वाला, मूर्ख, आपे से बाहर होने वाला, मनमानी करने वाला-प्रमत्त तथा आलसी हो।

गुरुशास्त्रसदाचार दूषके, कलहप्रिये, निन्दके, चुम्भके, क्षुद्रेऽसमययज्ञे च दांभिके दाक्षिण्यरहिते पापे, धर्महीने च गर्विते।

गुरुजनों के आचरण में दोष निकालने वाला, शास्त्रों को न मानने वाला, लडाकू, निन्दा करने वाला, चुगलखोर, सीमित हृदय वाला शास्त्रानुकूल यज्ञ न करने वाला, पाखंडी, असभ्य, पापी, अधर्मी और गर्वीला हो। ऐसे अनधिकारी जनों के सम्मुख इस स्तोत्र का पाठ नही करना चाहिये।

भक्तियुक्ते प्रदातव्यं न देयम परदीक्षिते

श्रद्धालु भक्तों को ही इस स्तोत्र के पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिये। द्वैत संप्रदाय में लगाव रखने वालों को भी यह स्तोत्र सुनाना नही चाहिये।

पशूनां सन्निधौ देवि नोच्चार्यं सर्वथा वक्चित्।
अस्यैव स्मृतमात्रस्य विघ्ना नश्यन्ति सर्वशः।।

भूल कर भी मूर्ख (जो भगवान् को स्मरण न करता हो) के सम्मुख इस स्तोत्र का पाठ नही करना चाहिये। इस बहुरुपगर्भ स्तोत्र का मन में स्मरण करने से भी अनेकों विघ्नों का पूर्ण रुप से नाश हो जाता है।

**गुह्यका यातुधानश्च वेताला राक्षसादयः।
डाकिनीश्च पिशाचाश्च क्रूरसत्वाश्च पूतनाः।
नशयन्ति सर्वे पठितस्तोत्रस्यास्य प्रभावतः।
खेचरी भूचरी चैव डाकिनी शाकिनी तथा। ये
चान्ये बहुधा भूता दुष्ट सत्त्वाः भयानकाः**

स्वर्ग के खज़ाने की रक्षा करने वाले गुह्यक (यक्ष) राक्षस, वेताल, नीच प्रकृति वाले डाकिनी, पिशाच तथा कठोर स्वभाव वाले तथा पूतना आदि राक्षसों से छुटकारा, इस स्तोत्र के पाठ करने से अवश्य हो जाता है। इतना ही नही, आकाश गामी प्राणि, पृथ्वी के हिंसक प्राणि, डाकिनी, शाकिनियों के घात से भी मनुष्य बच जाता है और भी अनेक क्रूर जीव, जो भयानक प्रहार करने वाले हों, वे भी इस बहुरुपगर्भ के पाठ करने वालों को हानि नही पहुंचा सकते।

व्याधिदौर्भिक्ष दौर्भाग्य मारी मोहविषादयः

शारीरिक रोग, कहत, अभाग्य, प्लेग, मोह, सदा व्याकुल रहना आदि ये सभी समस्यायें इस स्तोत्र के पाठ करने से सुलझ जाती हैं।

गजव्याघ्रादयो भीताः पलायन्ते दिशो दश सर्वे दुष्टाः प्रणश्यन्ति इत्याज्ञा पारमेश्वरी।।

जंगल में यदि हाथी या शेर सामने आ जाये, उस समय यदि बटोही इस बहुरुपगर्भ स्तोत्र का पाठ करे तो ये हिंस्र प्राणी इस पाठ के प्रभाव से दशों दिशाओं में स्वतः भाग जाते हैं। इस भांति सभी दुष्टों की समाप्ति हो जाती है। परमेश्वर भैरवनाथ की आज्ञा से ही इस स्तोत्र का प्रभाव प्रभावशाली है।

इति श्री ललितस्वच्छन्दे बहुरुपगर्भस्तोत्रराजः सम्पूर्णः।

श्री ललितस्वच्छद तन्त्र में वर्णित बहुरूपगर्भ स्तोत्र की हिन्दी टीका समाप्त हुई।

मूल्य : २५/- रु०

WINGS #9811321838, 2230838